Page No.
Date

उस भूमि पर चना के बदले में गेहूँ बोया जाता है तो अब गेहूँ के प्रयोग में उस भूमि से कुल 54 रू० की आय होगी जबकि चना बोया जाता है तो कुल आय 48 रू० ही होगी तो इस नवीन स्थिति में गेहूँ के प्रयोग से हस्तांतरित आय 48 रू० हुई और भूमि का लगान इससे अतिरिक्त उपज यानि 54-48 = 6 रू० हुआ।

लगान विशिष्टता का पुरस्कार है (Rent is a reward for specificity) इस प्रकार आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार लगान विशिष्टता का पुरस्कार है। आस्ट्रियन अर्थशास्त्री प्रो० वीजर ने उत्पादन के समस्त साधनों को दो वर्गों में विभाजित किया है (क) विशिष्ट साधन (Specific factors) तथा (ख) अविशिष्ट साधन (Non-Specific factors) विशिष्ट साधन वे होते हैं जिनका प्रयोग केवल एक विशिष्ट कार्य के लिए ही किया जा सकता है यानि इनमें गतिशीलता का पूर्ण अभाव पाया जाता है। दूसरी ओर अविशिष्ट साधन वे है जिन्हें एक से अधिक कार्यों में प्रयोग किया जा सकता है यानि इनमें गतिशीलता पायी जाती है। किन्तु विशिष्टता से सम्बन्धित निम्नलिखित तीन बातें ध्यान देने योग्य हैं :-

(i) विशिष्टता एक ऐसा गुण है जो किसी भी समय कोई भी साधन प्राप्त कर सकता है।

(ii) जो साधन आज विशिष्ट है, कल अविशिष्ट हो सकता है, उदाहरण के लिए भूमि के टुकड़े पर गन्ने की खेती हुई है तो वह विशिष्ट है। किन्तु गन्ने की फसल कट जाने पर वह अविशिष्ट हो जायेगा क्योंकि उस पर कोई भी दूसरी फसल उपजायी जा सकती है।

(iii) वास्तविक संसार में कोई भी साधन न तो पूर्ण विशिष्ट है न पूर्ण अविशिष्ट यानि कोई भी साधन अंशतः विशिष्ट तथा अंशतः अविशिष्ट रहता है।

वीजर के उपर्युक्त सिद्धान्त के आधार पर ही आधुनिक अर्थशास्त्रियों

B.A Degree one. Economics Honours
Paper 1st.
Dr. R.N. Tiwari
Dept. of Economics
A.N.S.D. College Shahpur Patory.
Date 30-5-2020

Name of Topic – भूमि का लगान बड़ी प्रजाति का एक [illegible]

Rent of land is leading species of a large genus. Explain
(Lecture No-41 Dated 29-5-2020 के आगे)

इस प्रकार लगान की उत्पत्ति का पहला कारण किसी साधन की पूर्ति का पूर्णतया बेलोचदार नहीं होना है। दूसरे शब्दों में लगान की उत्पत्ति का मुख्य कारण उत्पादन के साधनों की पूर्ति की उनकी माँग की तुलना में सीमित होना है। पूर्ति के बेलोचदार होने पर उत्पादन का कोई भी साधन – भूमि, श्रम, पूँजी अथवा व्यवस्था लगान प्राप्त कर सकता है। दूसरा कारण उत्पादन के किसी साधन की विभिन्न इकाइयों की उत्पादकता अथवा योग्यता में अन्तर है। ये दोनों ही तत्व भूमि की तरह पूँजी, श्रम, पूँजी एवं साहस में पाये जाते हैं। अतएव लगान एक सामान्य तथ्य है तथा उत्पादन के सभी साधनों को प्राप्त होता है।

लगान के आधुनिक सिद्धान्त के अनुसार लोग उत्पादन के साधनों से लगान की माप हस्तांतरित आय के आधार पर करते हैं। हस्तांतरित आय का तात्पर्य आय की उस मात्रा से है जिसे किसी साधन विशेष की एक इकाई सबसे अच्छे वैकल्पिक प्रयोग में प्राप्त कर सके। श्रीमती जान रॉबिन्सन ने हस्तांतरित आय की परिभाषा इस प्रकार से दी है "वह कीमत जो किसी साधन की एक इकाई को किसी विशेष उपयोग में लगाये रखने के लिए आवश्यक है हस्तांतरित आय कहलाती है।" (Transfer earning is the price that is necessary to retain a given unit of a factor in a certain industry) इसके अनुसार उत्पादन के कार्य में उत्पत्ति के किसी एक इकाई को कम से कम इतना तो अवश्य प्राप्त होना चाहिए जितना कि वह किसी अन्य उद्योग में प्राप्त कर सकता है। उदाहरण के लिए कोई श्रमिक किसी कारखाने में या कोयला के खान में काम करता है तो वहाँ उसे 1000 रु प्रति माह के हिसाब से आय होती है। यदि किसी अन्य उद्योग में वह श्रमिक कार्य करने जाये

Scanned with CamScanner

Page No.

Date

लगान के आधुनिक सिद्धांत का ढाँचा तैयार किया है जिन अर्थशास्त्रियों के अनुसार लगान की उत्पत्ति का मुख्य कारण साधनों की विशिष्टता है। दूसरे शब्दों में लगान विशिष्टता का भुगतान है। जो साधन विशिष्ट होता है उसकी सम्पूर्ण आय लगान होती है। क्योंकि उसका कोई दूसरा प्रयोग नहीं हो सकता अतएव उसकी कोई अवसर लागत नहीं होती। किन्तु अधिकांश भी साधन आंशिक रूप से विशिष्ट तथा आंशिक रूप में अविशिष्ट होता है। अतः किसी साधन के पारिश्रमिक में उस सीमा तक लगान का अंश होता है जिस सीमा तक वह विशिष्ट होता है।

Lecture No-42

B.A. Deg. I Economics Hons

Paper 1st.

Dated - 3.05.2020

Dr. R.N. Tiwari
Deptt of Economics
A.N.S.C. Shahpur Patory

Page No.

Date

तो उसे कम से कम 100 रु० प्रति माह अवश्य ही मिलना चाहिए। अतः यह 100 रु० ही उस श्रमिक की हस्तांतरित आय है। यदि कहीं किसी कारण वश किसी उद्योग जैसे लोहा एवं इस्पात उद्योग में श्रमिकों की माँग बढ़ जाती है तो श्रम की पूर्ति को शीघ्र बढ़ाया जा सकना नहीं जा सकता। ऐसी स्थिति में लोहा एवं इस्पात उद्योगवाले अधिक मजदूरी के लिए बाध्य होना पड़ेगा। मान लिया कि उस मजदूर को इस उद्योग में 125 रु० प्रतिमाह प्राप्त होते हैं तो यहाँ पर लोहा एवं इस्पात उद्योग के मजदूर की वास्तविक मजदूरी आय 125 रु० हुई जबकि उसकी हस्तांतरित आय केवल 100 रु० है। अतएव उसका लगान 125 - 100 = 25 रु० हुआ। इस प्रकार आधुनिक सिद्धान्त के अनुसार वास्तविक आय एवं हस्तांतरित आय के अन्तर को ही लगान कहते हैं। बेन्हम के अनुसार, "उत्पादन का साधन अपनी हस्तांतरित आय से जो कुछ भी अधिक प्राप्त करता है, वही लगान कहलाता है।" ("in general excess of what any unit gets over its transfer earning is in the nature of rent - Benham) इस प्रकार लगान उत्पादन के साधन की हस्तांतरित आय से अधिक अतिरेक है।

भूमि के टुकड़े पर लगान की उत्पत्ति किस प्रकार होती है? इसे निम्नलिखित उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है; मान लिया कि एक भूमि के टुकड़े पर या तो 4 क्विंटल चना पैदा हो सकता है या तीन क्विंटल गेहूँ और बाजार में चना का मूल्य 11 रु० प्रति क्विंटल और गेहूँ का 15 रु० क्विंटल है। अब मान लिया चना की बुआई की जाय तो चना से कुल आय 44 रु० होता है और गेहूँ की बुआई की जाय तो कुल 45 रु० ही होगी। इसलिए जहाँ 44 रु० कुल आय होगी वहाँ 45 रु० हस्तांतरित आय कहलाएगी और चना के प्रयोग में भूमि का लगान 48 - 45 = 3 रु० होगी। अब यह मान लिजिए कि गेहूँ का मूल्य बढ़कर 18 रु० प्रति क्विंटल हो जाता है और